



2030 तक ग्रीन शिप बिल्डिंग हेतु वैश्विक केंद्र

प्रलिस के लिये:

ग्रीन टग ट्रांज़िशन प्रोग्राम, संयुक्त राष्ट्र का सतत् विकास लक्ष्य, पेरिस समझौता, प्रधानमंत्री गतिशक्ति, अंतरराष्ट्रीय समुद्री संगठन (IMO)।

मेन्स के लिये:

पोत निर्माण क्षेत्र से संबंधित भारत की पहल।

चर्चा में क्यों?

केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन, जलमार्ग मंत्री ने ग्रीन टग ट्रांज़िशन प्रोग्राम की शुरुआत के साथ भारत को वर्ष 2030 तक ग्रीन शिप निर्माण हेतु वैश्विक केंद्र बनाने के लक्ष्य की घोषणा की है।

- इस पहल का उद्देश्य [उत्सर्जन को कम करना](#) और सतत् विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करना है।

पोत-परिवहन क्षेत्र से संबंधित भारत की पहल:

- हरित पत्तन और पोत परिवहन के लिये भारत का पहला राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र (NCoEGPS):

- भारत का पहला NCoEGPS केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन, जलमार्ग मंत्रालय (MoPSW) तथा ऊर्जा और संसाधन संस्थान के बीच एक सहयोग है। यह हरियाणा के गुरुग्राम में स्थित है।
 - केंद्र का उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र के [सतत् विकास लक्ष्य \(14\)](#) को संरक्षण और समुद्र आधारित संसाधनों के सतत् उपयोग के माध्यम से प्राप्त करना एवं समुद्री तथा तटीय पारस्थितिक तंत्र को स्थायी रूप से प्रदूषण से बचाना है।
 - केंद्र [पेरिस समझौते](#) के तहत दायित्वों को पूरा करते हुए भारत में ग्रीन शिपिंग के लिये नियामक ढांचा और वैकल्पिक प्रौद्योगिकी अपनाने का रोडमैप विकसित करेगा।
 - NCoEGPS, MoPSW के तहत पत्तनों, शिपिंग और अन्य संस्थानों के लिये ग्रीन शिपिंग क्षेत्रों पर नीति, अनुसंधान एवं सहयोग पर आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिये MoPSW की एक तकनीकी शाखा के रूप में कार्य करेगा।

- ग्रीन टग ट्रांज़िशन प्रोग्राम:

- ग्रीन टग ट्रांज़िशन प्रोग्राम [ग्रीन हाइब्रिड प्रोपलसन सिस्टम](#) द्वारा संचालित 'ग्रीन हाइब्रिड टग्स' के साथ शुरू होगा और भविष्य में मेथनॉल, अमोनिया एवं हाइड्रोजन जैसे गैर-जीवाश्म ईंधन समाधानों को अपनाया जाएगा।
 - इसका लक्ष्य वर्ष 2025 तक सभी प्रमुख बंदरगाहों में शुरुआती ग्रीन टग को आरंभ करना है एवं वर्ष 2030 तक सभी टग्स का 50% ग्रीन टग्स में परिवर्तित करना है।

- प्रधानमंत्री गतिशक्ति:

- [प्रधानमंत्री गतिशक्ति](#) ग्रीन पोर्ट्स पहल के साथ मल्टी-मोडल कनेक्टिविटी के लिये राष्ट्रीय मास्टर प्लान के माध्यम से देश में हरित रसद आपूर्ति शृंखलाओं के विकास में पहले ही तीव्रता देखी जा रही है।
 - बंदरगाहों का लक्ष्य वर्ष 2030 तक प्रतटिन कार्गो के कार्बन उत्सर्जन को 30% तक कम करना है।

- हरित यात्रा वर्ष 2050 परियोजना:

- यह नॉर्वे सरकार एवं [अंतरराष्ट्रीय समुद्री संगठन \(IMO\)](#) के मध्य मई 2019 में शुरू की गई एक साझेदारी परियोजना है, जिसका उद्देश्य शिपिंग उद्योग को कम कार्बन उत्सर्जन हेतु भविष्य की ओर उन्मुख करना है।

नषिकरषः

- वर्ष 2030 तक गरीन शपि बलिडगि के लयि ग्लोबल हब बनने का भारत का लक्ष्य एक स्वच्छ, हरति पर्यावरण की दशिा में बड़ा प्रयास है। इन पहलों से भारत के हरति रसद आपूर्त शृंखलाओं के वकिस में तेजी आणी एवं कार्बन उत्सर्जन कम होगा, जसिसे सतत् वकिस प्राप्त होगा।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्नः

प्रश्न. कषेत्रीय सहयोग के लयि हदि महासागर रमि संघ [इंडयिन ओशन रमि एसोसिएशन फॉर रीजनल कोऑपरेशन (IOR-ARC)] के संदर्भ में नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजयिः (2015)

- इसकी स्थापना अतयंत हाल ही में समुद्री डकैती की घटनाओं और तेल अधपिलाव (ऑयल स्पलिस) की दुर्घटनाओं के प्रतिकरियास्वरूप की गई है।
- यह एक ऐसी मैत्री है जो केवल समुद्री सुरक्षा हेतु है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- केवल 1
- केवल 2
- 1 और 2 दोनों
- न तो 1 और न ही 2

उत्तरः D

व्याख्याः

- कषेत्रीय सहयोग के लयि हदि महासागर रमि संघ (Indian Ocean Rim Association for Regional Cooperation- IOR-ARC) हदि महासागर में रमि (Rim) देशों की एक कषेत्रीय सहयोग पहल है, जसिे मारच 1997 में मॉरीशस में इसके सदस्यों के मध्य आर्थिक और तकनीकी सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से स्थापति कयिा गया था। अतः कथन 1 सही नहीं है।
- IOR-ARC एकमात्र अखलि भारतीय महासागर समूह है। इसमें 23 सदस्य देश और 9 डायलॉग पार्टनर शामिल हैं।
- इसका उद्देश्य हदि महासागर रमि कषेत्र में व्यापार, सामाजिक-आर्थिक तथा सांस्कृतिक सहयोग के लयि एक मंच उपलब्ध कराना है, जो लगभग दो अरब लोगों की जनसंख्या का प्रतनिधित्त्व करता है। अतः कथन 2 सही नहीं है।
- हदि महासागर रमि सामरिक और कीमती खनजिों, धातुओं एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों, समुद्री संसाधनों तथा ऊर्जा से समृद्ध है, जो सभी वशिषिट आर्थिक कषेत्रों (Exclusive Economic Zones- EEZ), महाद्वीपीय समतल और गहरे समुद्री तल से प्राप्त कयिा जा सकते हैं।
- अतः वकिल्प D सही है।

स्रोतः पी.आई.बी.